Research Paper | Education | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 11 | Issue : 1 | January 2025



आधुनिकता की ओर ओझल (करमा पर्व का सरांश)

सत्येन्द्र कुमार
सहायक प्राध्यापक

ABSTRACT

आदिवासियों की दिनचर्या तथा जिने के साधन प्रकृति है। इनके हर पर्व एवं तीज प्रकृति की रक्षा तथा प्रकृति की नियमों को बनाये रखने पर जोर देती है। इनका जीवन की पूरी आधार कर्म की उपर आश्रीत है और इस व्यवहार को एक पिढ़ी से दूसरी पिढ़ी में ले जाने के लिए यह समाज कहानी, नृत्यों की सहारा लेती है।

ऐसी ही कविदंतियों पर आधारित यह पर्व करमा सरगुजा संभाग के जनजातियों में वर्षो से चली आ रही पर्व है। जिसमें बिरसा और नेनकी तथा उसके बाद उनके पुत्रों की कर्म की परिणाम समाज तक संदेशों पहूंचाने का कार्य कर रही है और इसे जनजाति समाज दो प्रकार से करती है।

1. राजकर्मा: जो परिवार के सदस्यों को तथा
2. देश कर्मा: पूरे समाज के लोंगो तक गीत संगीत नृत्यों वेश–भूषाओं वाद्य यंत्रों से परिचित कराने का कार्य कर रही है।

भूमिका

आदिवासियों का पूरा जीवन शैली और जीविका का मुख्य साधन प्रकृति है। दूसरा प्रत्येक पर्व एवं तीज प्रकृति से जूड़ा हुआ है। संगीत और नृत्य छत्तीसगढ़ जीवन के सम्पादन है। आदिवासी और लोक जीवन की कर्ममूलक गतिविधियों और सौन्दर्य बोध इतने परस्पर और घुले–मिले है कि कई बार जीवन की गतिविधियों और कला में अंतर करना कठिन हो जाता है। आदिवासियों के कठोर वन्य जीवन और ग्रामीण अंचल की कृषि संस्कृति श्रम पर आधारित है। छत्तीसगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रों में लोक कथाओं पर आधारित वह एक महत्वपूर्ण पर्व कर्मा पर्व जिसे छत्तीसगढ़ के अंचल में करम पर्व के नाम से जाना जाता हैं।

अगर हम इस शब्द को शाब्दिक रूप से देखें तो सामान्यतः कर्मा. पर्व से बना हुआ है। कर्मा का शाब्दिक अर्थ – व्यक्ति की शारिरिक मानसिक तथा वाणी सम्बन्धि सभी क्रियाएं को कर्म कहतें हैं। पर्व का शाब्दिक अर्थ हर वर्ष उसी दिन किए जाने वाले कार्य को हम पर्व कहते है। अर्थात अगले वर्ष भी उसी दिन कार्य करना।

वैसे आप सभी लोग जनजातियों की इस पर्व से भली–भांति परिचित होंगें जनजाती समाज का यह पर्व छत्तीसगढ़ ही नहीं छत्तीसगढ़ ही नहीं छत्तीसगढ़ के आस–पास के राज्यों में भी मनाया जाता है। खास कर जनजाती बाहुल्य राज्यों में यह पर्व मनाया जाता है। परन्तु छत्तीसगढ़ की सरगुजा संभाग की जन जाति समाज इस पर्व को बड़े हर्ष उल्लास के साथ मनाते है। यह पर्व भाद्र मास के एकादषी में जनजाति समाज के लोगो द्वारा मनाया जाता है।

कर्मा के प्रकार

यह पर्व पर दो तरिकों से मनाये जाते है–

1. राज करमा: यह कर्मा केवल पारिवारिक लोगों के द्वारा ही पूजा की जाती है।
2. देश करमा: यह कर्मा पूरे गांव या समूह के लोग पूजा करते है।

जनजाति समाज की लोक मान्यताएँ

जनजाति समाज के यह पर्व की शुरूआत की अनेक लोक गाथाएं एवं लोक मान्यताएं है। इस पर्व की शुरूआत बिरसा और नेनकी नाम के दम्पती के द्वारा हुआ था, जिनके विवाह के कई वर्ष बीत जाने के बावजुद भी उनको संतान की प्राप्ति नहीं हुई थी एक दिन बिरसा और नेनकी कृषि कार्य करने के लिए अपने खेत की ओर प्रस्थान करती है। और कार्य करते–करते वह पूरी तरह से थक जाती है। और वह वृक्ष के पास जाकर थोड़ी देर आराम करने को सोचती है, और वहीं पर आराम करनें लगती है, तभी अत्यधिक थकावट की वजह से उसकी आंख लग जाती है। और नेनकी जिस वृक्ष के पास सो रही थी वह वृक्ष कर्म की वृक्ष था कुछ देर बाद नेनकी के स्वपन में कर्म देव बोलते हैं, कि आपको संतान सुख प्राप्त नहीं हो पा रहा हैं। तो एक उपाय करों इस पेड़ की तीन डाली अपने घर के अन्दर ले जाकर इसे प्रतिदिन सेवा करेगी तो यह तेरी मनोकामना पूर्ण हो जायेगी और कुछ देर बाद नेनकी की स्वपन टूट जाती है। और अपने पति को यह सारी बातें दोहराने लगती है। और कुछ देर विचार विमर्श के बाद उस वृक्ष की डाली को जिस प्रकार स्वपन में बोला गया था उसी विधि के आधार पर कार्य करते हुए दोंनो पति–पत्नी उसकी सेवा अर्चना करती है। जिसे देखकर गांव के बाकी लोगों भी नेनकी से उसके बारे में प्रश्न करते हैं। फिर नेनकी उन्हें भी स्वपन की बातें

दोहराती है। जिसका विष्वास कर गांव के लोग इस कार्य को करने में लग जातें हैं। कुछ दिन बीत जाने के बाद नेनकी गर्भ धारण करती है। और उसे पुत्ररत्न की प्राप्ति होती है, जिसे नेनकी पुत्र रत्न प्राप्ति के उपलक्ष में उस कर्मवृक्ष का नाम देती है। इसी प्रकार नेनकी के 7 पुत्र और 1 पुत्री का जन्म होता है, जिनका नाम कर्मा, धर्मा, धनुजा, रिक्षा, मंगरा, भौरा, व लीटा हैं। समय बीतते गया बिरसा और नेनकी की मृत्यु हो जाती है।

वैसे तो यह पर्व की शुरूआत इस प्रकार से हुआ था परंतु जब यह पर्व गांवों में मनाया जाता है तो पटेल के यहां इन सात भाईयों के कहानी से शुरूआत होती है। जब उनके पिता जी का देहांत हो गया तब सभी भाई आपस में सलाह के लिए आने वाले समय में हम अपने जीवन निर्वाह कैसे करेंगे इस बात को लेकर सभी भाईयों के बीच मंथन होने लगा और सभी ने मिलकर एक उपाय सुझाया, कि हम सभी अपने पिता जी के समान कार्य करेंगे। साथ ही साथ उनके सामने एक और समस्या आ खड़ी हो गई कि सभी लोग काम में चले जाएंगे, तो उनके घर में स्त्रियों की देख–रेख कौन करेगा। इस बात पर भी मंथन होने लगा, तभी सभी लोगों की सहमति से इस कार्य के लिए परिवार का सबसे छोटा भाई घर में रहेगा। इस बात पर मंथन हुआ, क्योंकि गोंड़ समाज की मान्यता है कि वे जितने भी स्त्रियाँ हैं वो उनके रिष्ते में भाभी होंगीं, जिससे आपस में जो भी समस्या होगी उसे असानी से हल किया जा सकता है, क्योंकि सम्भवतः छत्तीसगढ़ यह मान्यता है कि छोटे भाई की पत्नि बड़े भाई को ज्येष्ठ मानते हैं, और विवाह के समय उसके मुड़ ढाकने की परम्परा के कारण उनसे दूरी बनाकर रहते हैं जिससे छोटी वाली बहु बड़ों के सामने खुलकर बात नहीं कर पाती, यही कारण है कि उन्होने अपने सबसे छोटे भाई को घर में रहने का अश्वासन दिया। और अगले दिन सभी लोग इस कार्य से अपने–अपने जो बात हुई थी, उसके अनुसार कार्य करने के लिए चले गये। और कुछ दिन बीतने के बाद सभी स्त्रियाँ अपने देवर से बोलती है कि कोई भी काम न होने के कारण रात में अच्छी तरीके से नींद नहीं आती है तो हम सभी यह कार्य करते हैं कि अपने घर के आँगन में सभी लोग नृत्य करते हैं, और जैसे नृत्य करते–करते थक जायेंगे तो नींद जल्दी आ जाएगी। यह बात सुनकर सभी लोग राजी हो गये, और अगले दिन इस प्रकार से कार्य करने लग गये, और वो सभी नृत्य करने लग गये, और जब नृत्य करते–करते थक जाते थे, तो हाय करम–ओ हो करम इस प्रकार से बोलते थे। और प्रति दिन इसी प्रकार से कार्य होता था, तब उनके पूर्व के करम से एक कर्म बीज उत्पन्न हुआ। कुछ दिन बीतने के बाद पौधा धीरे–धीरे बढ़ने लग गया, और जिस प्रकार से पौधा हिलोर मारता था, उस प्रकार से परिवार के सभी सदस्य नृत्य करते थे। इसी प्रकार कुछ दिन बीत जाने के बाद जो लोग बाहर कार्य करने गये थे, वे लोग वापस आने लगे, और आने के बाद कुछ दूरी पर नदी के किनारे एक स्थान पर शाम हो जाने के कारण अपने छोटे भाईयों से विचार करने लगते है कि हम तो यहां अच्छे हैं परन्तु हमारे परिवार के लोग कैसे होंगे, इस कारण से चिंता सताने लगी और अगर सुखी जीवन व्यतीत कर रहे होंगे तो हम सभी यहीं अच्छा भोजन बनायेंगे, इस प्रकार से विचार करने लगे। तभी सभी के सलाह पर अपने बड़े भाई से छोटे भाई जिसे छत्तीसगढ़ी में छोटे सैंझला बोलते हैं, जिसका नाम भौंरा था उन्हें घर के लोगों को देखने के लिए भेजता है। उसके बाद वह अपने घर की ओर प्रस्थान करता है। तभी यह देखता है कि परिवार के सभी लोग अपने घर के आँगन के पेड़ के पास नृत्य कर रहें थे। तब वह इस प्रकार के मनमोहक नृत्य को देखकर वह भी उसी प्रकार से नृत्य करने लग जाता है, फिर उसके बाद बहुत समय बीत जाने के बाद उसके बड़े भाई फिर एक भाई (मंगरा) को घर भेजता है परन्तु वो भी इसी तरीका से कार्य करने लग जाता है, एक के बाद एक सभी भाई इसी प्रकार से कार्य को करते हैं। तब अंतिम में सबसे बड़ा भाई कर्मा अपने घर जाता हैं, और परिवार के सभी सदस्य को वहां इस प्रकार से नृत्य करते देखकर गुस्से में वह उस कर्म वृक्ष के डाल को काट देता है। और उसे जंगल में जाकर फेंक देता है। फिर सभी भाईयों को बुलाकर बोलता है कि आप मेरे अनुसार कार्य नहीं किये हो तो आज से हम सभी भाई अलग–अलग कमाएंगे और अलग–अलग खायेंगे। इस प्रकार से सभी लोग अपने खेत बाड़ी को सात भागों में बंटवारा कर लेते हैं। और इसी प्रकार से कार्य करने लगते हैं तभी सभी के खेत में जो भी खेती करते थे, वे अच्छे उपज होने लगे। परन्तु उसके बड़े भाई के खेत में फसल तो उपज होता था, परन्तु अन्न पूर्णरूप से विकसित नहीं हो पाता था। इस प्रकार कि समस्या उनका बड़ा भाई कर्मा झेल रहा था, तो वह अपनी पत्नी से सलाह लेता हैं कि मेरे छोटे भाईयों के खेतों में फसल अच्छा होता है मैं भी तो उसी प्रकार से खेती करता हूं परन्तु मेरे खेतों में फसल क्यों नहीं हो पाता, इस बात को उसकी पत्नी सुनने के बाद अपना मत देती है कि आप किसी भविष्यवाणी करने वाले या ओझा (बैगा) से इस बात की सलाह लो, इस प्रकार से उसकी पत्नि सलाह देती है। तब जाकर इस सलाह को उसका पति मान लेता है। और विचार कराने कि लिए किसी ओझा (बैगा) के पास जाता है तो ओझा बोलता है कि आप कुरूमदेव के पास जाओ। वही आपकी समस्या के बारे में बात रखना, वहीं इस समस्या का हल बता पाएंगे। इस बात को सुनकर उसके बड़े भाई कुरूमदेव से मिलने चला जाता है। तभी वह रास्ते में किसी भी चीज को खाने के लिए तोड़ता, तो उस फल में किड़े–मकोड़े पड़ जाते थे, कभी पानी पीने के लिए जाता तो पानी भी खराब हो जाता था। कुछ दूर चलने के बाद एक गांव में एक बुजुर्ग महिला रहती थी, उसके पास जाकर बोलता है कि माता पानी मिलेगा क्या? तभी बुजुर्ग महिला बोलती है कि बेटा कहां जा रहे हो, तब वह अपनी समस्या को बतलाता है कि मेरे सभी भाईयों के खेतों में जो भी फसल उगाते हैं तो वह फसल उसका दुगुना उत्पन होता है, परन्तु जब मैं फसल लगाता हुं उसमें न तो ठीक से फसल उगता है न ही अच्छा अन्न प्राप्त होता है। इस बात को सुनकर बुजुर्ग महिला बोलती है कि मेरे कमर के नीचे कुल्हे में जो पीड़हा (जिसे छत्तीसगढ़ में इसका उपयोग बैठने के लिए करते हैं) वह वस्तु बुजुर्ग महिला के कुल्हे में चिपका हुआ है, तब बुजुर्ग महिला बोलती है इस कारण से मैं तुझे पानी नहीं दे पाउंगी। और साथ ही साथ अपनी समस्या को हल कराने के लिए कुरूम देव से निवेदन करने की बात बोलती है। फिर कुछ दूरी चलने के बाद पुरूष को फिर एक बुजुर्ग महिला दिखाई पड़ती है। और उसके सिर के उपर में घास उगा था उस घास को छत्तीसगढ़ के लोग बहरी के नाम से जानते हैं इसका उपयोग झाडू के रूप में करते है वही वस्तु महिला के सिर पर उगा हुआ था जिससे पुरूष उस महिला से पीने के लिए पानी देने के लिए निवेदन करता है। साथ ही साथ पुरूष के समस्या के बारे में पूछता है तब पुरूष जवाब देते हुए अपनी समस्या को बतलाता है, कि मेरे सभी

भाईयों के खेतों में जो भी फसल उगाते हैं वह फसल उसके दुगुना उत्पन होता है, परन्तु जब मैं फसल उगाता हुं उसमें न तो ठीक से फसल उगता है न ही अच्छा अन्न प्राप्त होता है। इसके बाद महिला भी अपनी समस्या का हल पूछने के लिए कुरूमदेव से निवेदन करना इस प्रकार से बोलती है। और धीरे–धीरे चलते–चलते कुरूमदेव के पास पहुंच जाता है। तब उस पुरूष ने कुरूमदेव से अपनी समस्या को बतलाता है। और मेरी इस समस्या का समाधान कीजिए, ऐसा कुरूमदेव के सामने कहता है फिर उसकी समस्या सूनने के बाद उसका हल बताते हुए कुरूमदेव बोलते हैं कि जब घर जाना तो भादों की महीना में शुक्ल पक्ष जिसे छत्तीसगढ़ में अंजोरी पाक के नाम से जाना जाता है। उस मास के अक्ति दुज, तीज में गांव से सलाह लेकर कोटवार को बोलना कि सभी गावों वाले अपने घरों में जांई उगाये जिसे मध्य छत्तीसगढ़ में जांवा बोने के नाम से जाना जाता है। फिर इसे अंजोरी पाक के एकादषी में फिर से कोटवार को बोलने के लिए बोलना कि अगले दिन गांव के सभी लोग उपवास रहेंगे। और उसी षाम को जो गांव वाले जांई बोने के लिए सभी घर को बोले थे, उसे अपने घर में लेकर आने का निवेदन करना फिर एकादषी के दिन जो पेड़ काट कर तु जंगल में फेंका था। उसे लेकर अपने घर के आँगन में लगाकर उसकी सेवा करना। इस प्रकार से कुरूमदेव पुरूष से बोलते है। फिर इसके बाद जो पुरूष है जिन बुजुर्ग महिलाओं से मुलाकात हुआ था उसकी समस्या कुरूमदेव के पास रखते हैं और कुरूमदेव प्रथम महिला की समस्या का हल बताते हुए बोलते हैं कि अपनी भांजा भांजी से जब भी मुलाकात हो तो तथा ज्येष्ठ को देखते ही आंचल से अपने सिर को ढकने के लिए सलाह देता है। ठीक इसी प्रकार से दुसरी महिला से यही वचन को बोलने की बात करता है। जब पुरूष अपने घर जाते समय उन महिला से मुलाकात कर उन महिला को कुरूमदेव के वचनों को बतलाता है। और बोलता है, कि अपनी भांजा–भांजी तथा ज्येष्ठ से जब भी मुलाकात हो तो उनसे दुरी बनाकर रखना साथ ही साथ अपनी आंचल से सिर को ढ़कना इस प्रकार से बोलता है। इसके बाद कुरूमदेव ने जो बात बतलाई थी उस बात को पुरा करने के लिए अपने घर की ओर प्रस्थान करता है, और कुरूमदेव के बातों का पालन करता है।

करमडार (करमा पर्व)

सरगुजा संभाग में यह पर्व भादो–पूर्णिमा तथा कुवॉर इन माह मे मनाए जाता है। जिसमें जंगल से एक करम डाल लेकर आते है। उसे गांव के गौटिया के यहाँ गाडा जाता है इसके बाद पूरे गांव के लोग गौटिया के यहाँ इकट्ठा होते है। जांवा स्वरूप कुछ बीज बोते है। और वहाँ गांव के प्रमुख बैगा करम देव की पूजा कर करम देव की कहानी पुरे गांव वाले को सुनाते है। इसके बाद पुरे गांव की देवी–देवता की आराधना करते हुए गौटिया के आंगन में जहां करमडार लगा होता है वहां से 5–10 भांवर गीत गाकर देवी–देवता की आराधना करते है। इसके बाद प्रसाद स्वरूप महुआ का रसोडा वितरण करते हैं।

महुआ का रसोडा बनाने की विधिः एक गंज में आधा पानी जिसमें गरम होने के बाद महुआ के फूल उबाला जाता है। फिर महुआ की जो चासनी बनी होती है, उसी चासनी में चावल आटा जिसे रूंई जैसे दीप जलाने के लिए बनाए जाते है। वैसे ही चावल आटा रोटी बनाया जाता है। उसे खौलते हुए महुआ चासनी में डाला जाता है उसके बााद उसे निकाल कर उसे प्रसाद स्वरूप सभी को बांटा जाता है।

इसके बाद गांव के गौटिया के घर में रात भर नृत्य किया जाता है जो इस प्रकार हैंः

ये रे भाई हसदेव जंगल ला झन काटा रे,
जंगल हा जीव ला बचाथे रे,
यही तो गांव के बेंक हरे रे,
हरा सोना तो यही उपजथे रे,
यही तो पानी ला गिराथे रे,
ये रे भाई जंगल ला झन काटा रे,,,,,,,,
यही तो जन जाति के देवता रे,
जीव मन के यही तो घर रे,
जंगल मा जड़ी–बुटी हावे रे,
जनजाति मन के धन रे,
ये रे भाई हसदेव जंगल ला झन काटा रे,,,,,,,,,,

इस प्रकार जनजाति गीत गाते हुए नृत्य करते हैं इस नृत्य के दौरान जो युवक होते हैं उन्हें रिझवार तथा युवती को रिझवारिन इन नामों से पुकारा जाता है। तथा जो वाद्य यंत्र (मांदर) एवं गीत गायन करते हैं उन पुरूशों को स्वांग तथा गीत के दोहराने वाले महिलाओं को स्वांगीन नाम से पुकारा जाता है।

कर्मा नृत्य के समय युवक एवं युवतियों द्वारा पहने गये परिधान :

पुरूष	महिला
1. कलगी	1. साड़ी
2. पगड़ी	2. कलगी
3. धोती	3. आभुशण
4. कुर्ता	4. मयुर पंख
5. घुंघरू	
6. मयुर पंख	

कर्मा नृत्य में निम्न वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता हैंः–

1. मांदर
2. मृदंग
3. झांझ
4. मंजिरा
5. मोहरी
6. बाँसुरी
7. ढोलक
8. करताल
9. झुमका

तथा अन्य वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है।

लगभग एक दिन गायन होने के बाद विसर्जन जिसे सरगुजा संभाग में सराना कहते है। उसके लिए गांव भर नृत्य करते हुए नदी में सराया या विसर्जन किया जाता है।